

"श्री शिवपुराण के अध्ययन की वर्तमान में प्रासंगिकता"**प्रस्तावना**

कपिल पाराशर
(पीएच. डी. शोधार्थी)
विक्रान्त यूनिवर्सिटी
महू

Paper Received date

05/07/2026

Publishing Date

10/07/2026

DOI<https://doi.org/10.5281/zenodo.21979102>

**IMPACT
FACTOR
5.924**

शिवपुराण हिन्दू धर्म के अठारह महापुराणों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण व सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाले पुराणों में से एक है, जिसमें भगवान शिव के विविध रूपों, अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्तों और भक्ति का विशद वर्णन किया गया है।

चौबीस हजार श्लोकों और सात संहिताओं में निबद्ध इस महाग्रन्थ में परात्पर परब्रह्म परमेश्वर के 'शिव (कल्याणकारी) स्वरूप का तात्त्विक विवेचन, रहस्य, महिमा एवं उपासना का सुविस्तृत वर्णन है।

वर्तमान युग में, जब मानव जीवन तेज़ गति से भौतिकवादी होता जा रहा है और आध्यात्मिक मूल्यों का हास हो रहा है, शिवपुराण का अध्ययन न केवल धार्मिक दृष्टि से अपितु दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यधिक प्रासंगिक हो गया है।

*** शिवपुराण का स्वरूप एवं संरचना:-**

- शिवपुराण में २४,००० श्लोक हैं तथा इसके क्रमशः छः खण्ड (संहिताएँ) हैं—विद्येश्वर संहिता, रुद्र संहिता, शतरुद्र संहिता, कोटिरुद्र संहिता, कैलास संहिता और वायु संहिता।
- कुछ स्रोतों में सात संहिताओं का उल्लेख मिलता है, जिसमें उमा-संहिता भी सम्मिलित है।
- इस पुराण में शिव को पंचदेवों में प्रधान अनादि सिद्ध परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया गया है।
- शिव-महिमा, लीला-कथाओं के अतिरिक्त इसमें पूजा-पद्धति, अनेक ज्ञानप्रद आख्यान और शिक्षाप्रद कथाओं का सुन्दर संयोजन है।

- इसमें भगवान शिव के भव्यतम व्यक्तित्व का गुणगान किया गया है-शिव, जो स्वयंभू हैं, शाश्वत हैं, सर्वोच्च सत्ता हैं, विश्व चेतना हैं और ब्रह्माण्डीय अस्तित्व के आधार हैं।

वर्तमान युग में शिवपुराण के अध्ययन की प्रासंगिकता

१. आध्यात्मिक एवं दार्शनिक प्रासंगिकता:-

- वर्तमान में मानव जीवन में तनाव, अवसाद, मानसिक अशांति और अर्थहीनता की भावना तेज़ी से बढ़ रही है।
- शिवपुराण का अध्ययन व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त करने में सहायक होता है और उसे मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर करता है।
- इसमें भक्ति, ज्ञान और कर्म योग के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति के उपाय बताए गए हैं।
- शिवपुराण शिव तत्व को समझने का मार्ग दिखाता है और आत्मा तथा परमात्मा के संबंध को स्पष्ट करता है।
- इसमें सांख्य दर्शन, योग दर्शन, शैव दर्शन, शाक्त दर्शन, वैष्णव दर्शन, तन्त्र एवं वेदान्त आदि दर्शनों का सम्यक् विवेचन है।
- विभिन्न पुराणों में ही पुराण के पाँच लक्षण-सृष्टि, प्रलय, राजवंश, मन्वन्तर, और वंशानुचरित-प्रतिपादित किए गए हैं, जिनमें सृष्टि और प्रलय दार्शनिक विवेचन के विषय हैं।
- आधुनिक युग में जब विज्ञान और तकनीक ने मानव को भौतिक सुख तो दिए हैं, परन्तु आंतरिक शांति नहीं दे पाए, ऐसे में शिवपुराण का अध्ययन व्यक्ति को आंतरिक संतुलन और मानसिक शांति प्रदान करता है।
- पंचाक्षर मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करने से व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है और मानसिक शांति मिलती है।

२. सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता:-

- शिवपुराण भारतीय संस्कृति के भण्डागार हैं।
- इनमें भारत की सत्य और शाश्वत् आत्मा निहित है।

- ये भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के मेरूदण्ड हैं।
- इनके गम्भीर अध्ययन के बिना भारत के अतीत का ज्ञान अपूर्ण ही रह जाता है।
- शिवपुराण में लोक-चित्रण, सदाचार-सम्बन्धी ज्ञान, नारी-स्थिति एवं शिक्षा, लोकाचार, विवाह, दान का माहात्म्य, ललित कलायें और संस्कृति का वर्णन है।
- वर्तमान में जब पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय युवाओं पर तेज़ी से बढ़ रहा है और पारम्परिक मूल्यों का हास हो रहा है, ऐसे में शिवपुराण का अध्ययन भारतीय संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित रखने में सहायक होता है।
- नारी-स्थिति एवं शिक्षा के संदर्भ में शिवपुराण में सती और पार्वती की कथाएँ नारी के त्याग, भक्ति और शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।
- वर्तमान में जब नारी सशक्तिकरण का प्रश्न प्रासंगिक है, शिवपुराण का अध्ययन नारी की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक भूमिका को समझने में सहायक हो सकता है।

3. साहित्यिक प्रासंगिकता:-

- शिवपुराण का साहित्यिक अनुशीलन रस-विधान, अलङ्कार-निरूपण, छन्दोयोजना और भाषा-शैली के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।
- पुराणों की रचना का मूल उद्देश्य धर्म और अध्यात्म के गूढ़ तत्वों को सामान्य जनता के लिए सरल भाषा और सुगम शैली में उपस्थित करना था।
- वेद और उपनिषदों का ज्ञान मेधा-सम्पन्न विद्वानों तक सीमित रहा है, परन्तु पुराणों में एक नवीन साहित्यिक शैली का अवलम्बन करके रोचक कथाओं, प्रभावशाली दृष्टान्तों और कवित्वमय वर्णनों के रूप में वेदों और उपनिषदों के गहन सिद्धान्तों को उपस्थित करके उनको सर्व साधारण के लिए बोधगम्य बना दिया गया।
- वर्तमान में जब सरल और सुगम भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता है, शिवपुराण की शैली प्रासंगिक है।
- शिवपुराण में प्राकृतिक वर्णन, हिमालय वर्णन, सात द्वीपों का वर्णन, युद्ध वर्णन और अमूर्त भावों का मानवीकरण है।
- ये साहित्यिक तकनीकें आधुनिक साहित्यकारों और लेखकों के लिए प्रेरणादायक हो सकती हैं।

४. धार्मिक एवं अनुष्ठानिक प्रासंगिकता:-

- शिवपुराण में शिव-आराधना, लिंग-पूजा, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शिव आराधना के प्रमुख उपादान, शैव-व्रत, वर्णाश्रम-धर्म और शिव के विभिन्न अवतारों का वर्णन है।
- शिवलिंग पूजा सर्वोत्तम साधना मानी गई है।
- वर्तमान में जब धार्मिक अनुष्ठानों में अर्थहीनता और यांत्रिकता आ गई है, शिवपुराण का अध्ययन अनुष्ठानों के दार्शनिक और आध्यात्मिक महत्व को समझने में सहायक होता है।
- शिवलिंग की उत्पत्ति और महत्व, रुद्राक्ष धारण करने के लाभ, महामृत्युंजय मंत्र का प्रभाव-ये सभी विषय शिवपुराण में विस्तार से वर्णित हैं।
- महामृत्युंजय मंत्र 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्...' का जाप दीर्घायु प्रदान करता है, रोग और मृत्यु के भय को दूर करता है और आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाता है।
- वर्तमान में जब महामारियों और स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं ने मानव को घेर लिया है, ऐसे मंत्रों का अध्ययन और अनुष्ठान प्रासंगिक हो जाता है।

५. मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सीय प्रासंगिकता:-

- शिवपुराण का श्रवण, पाठ और मनन करने से व्यक्ति को सांसारिक दुखों से मुक्ति मिलती है और वह मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होता है।
- शिव महापुराण का पाठ करने से जन्म-जन्मान्तर के पापों का नाश होता है, समस्त संकटों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है।
- आधुनिक मनोविज्ञान में भी ध्यान, योग और मंत्र-जाप के चिकित्सीय प्रभावों को मान्यता मिली है।
- शिवपुराण में ध्यान, योग और शिव साधना का विस्तृत वर्णन है।
- रुद्राक्ष धारण करने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है, स्वास्थ्य, समृद्धि और मानसिक शांति प्रदान होती है।

वर्तमान में जब मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ तेज़ी से बढ़ रही हैं, शिवपुराण में वर्णित योग, ध्यान और मंत्र-जाप की तकनीकें मनोचिकित्सीय दृष्टि से प्रासंगिक हो सकती हैं।

६. पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय प्रासंगिकता:-

- शिवपुराण में प्राकृतिक वर्णन, हिमालय वर्णन, सात द्वीपों का वर्णन और प्रकृति के विभिन्न पहलुओं का सुन्दर चित्रण है।
- शिव को प्रकृति के प्रतीक के रूप में देखा जाता है—वे पशुपति हैं, वृक्षों और पहाड़ों के स्वामी हैं, गंगा को अपने जटाओं में धारण करने वाले हैं।
- वर्तमान में जब पर्यावरण प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकीय संकट गम्भीर रूप ले चुके हैं, शिवपुराण का अध्ययन प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना को जागृत कर सकता है।
- शिव की उपासना प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का मार्ग प्रदान करती है।

७. शैक्षिक एवं शोधपरक प्रासंगिकता:-

- शिवपुराण पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में डी० फिल० और पी०एच०डी० के स्तर पर शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं।
- शिवपुराण एक समीक्षात्मक अध्ययन के रूप में शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किए गए हैं।
- वर्तमान में जब अन्तःविषयक अध्ययन (interdisciplinary studies) को महत्व दिया जा रहा है, शिवपुराण का अध्ययन धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में शोध के लिए समृद्ध सामग्री प्रदान करता है।
- पुराणों का ऐतिहासिक महत्व धार्मिक महत्व की अपेक्षा कम नहीं है।
- कलिवंशीय राजाओं का सच्चा वर्णन पुराणों में मिलता है, जिसकी पुष्टि आधुनिक ऐतिहासिक उपकरणों—शिलालेख, ताम्रलेख, मुद्रा आदि से भी हो रही है।

अतः शिवपुराण का अध्ययन ऐतिहासिक शोध के लिए भी प्रासंगिक है।

*** शिवपुराण के अध्ययन के लाभ:-**

शिवपुराण के अध्ययन से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं:

- पापों का नाश: शिव महापुराण का पाठ करने से व्यक्ति के सभी पाप समाप्त हो जाते हैं।
- मोक्ष की प्राप्ति: शिव भक्ति करने वाला व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।

- मनोवांछित फल: शिवलिंग पूजन करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।
- शांति और समृद्धि: जीवन में शांति, समृद्धि और सुख की वृद्धि होती है।
- आत्मज्ञान: शिव महापुराण को पढ़कर और इसके उपदेशों का पालन करके व्यक्ति आत्मज्ञान प्राप्त कर सकता है।
- मानसिक शांति: पंचाक्षर मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करने से मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।
- स्वास्थ्य लाभ: महामृत्युंजय मंत्र दीर्घायु प्रदान करता है और रोगों से मुक्ति दिलाता है।
- नकारात्मक ऊर्जा से मुक्ति: रुद्राक्ष धारण करने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है।

***आधुनिक चुनौतियाँ और शिवपुराण का समाधान**

*वर्तमान युग की प्रमुख चुनौतियाँ और उनके समाधान में शिवपुराण की भूमिका

निष्कर्ष

- शिवपुराण भगवान शिव के अनंत स्वरूप, उनकी महिमा और उनकी उपासना की विधियों को समझाने वाला एक दिव्य ग्रंथ है।
- यह हमें सिखाता है कि भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के मार्ग से ही जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है।
- वर्तमान युग में शिवपुराण का अध्ययन न केवल धार्मिक दृष्टि से अपितु दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पर्यावरणीय और शैक्षिक दृष्टि से अत्यधिक प्रासंगिक है। यह ग्रंथ व्यक्ति को आत्मज्ञान, मानसिक शांति, सांस्कृतिक पहचान, पर्यावरण चेतना और सामाजिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का मार्ग प्रदान करता है।
- शिवपुराण को पढ़कर और इसके उपदेशों का पालन करके व्यक्ति आत्मज्ञान प्राप्त कर सकता है और मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।
- अतः वर्तमान में शिवपुराण के अध्ययन की प्रासंगिकता सर्वथा सिद्ध होती है और इसका प्रचार-प्रसार एवं गहन अध्ययन समकालीन मानव कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक है।



संदर्भ ग्रन्थ:

1. शिव पुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. शिव पुराण: एक समीक्षात्मक अध्ययन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 2003
3. शिव महापुराण (हिन्दी अनुवाद), विभिन्न प्रकाशक
4. विकिपीडिया: शिव पुराण